उपाध्यक्ष महोदय : देखिए, एस्टेब्लीश कंवेंशन है, पार्लियामेंट का सत्र चल रहा हो, कोई पालिसी स्टेटमेंट पार्लियामेंट के बाहर नहीं होना चाहिए। प्रधानमंत्री जी क्लेरीफाई करें कि उन्होंने क्या कहा है।

श्री मंगत राम शर्मा (जम्मू) : आप मुझे भी बोलने का समय दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए, मैं प्रधानमंत्री जी को बुला चुका हूं।

श्री मंगत राम शर्मा : मैंने पहले भी आपसे निवेदन किया था।

उपाध्यक्ष महोदय : आप कह लीजिए क्या कहना है। गुजराल साहब, इनको जरा कह लेने दीजिए।

[अनुवाद]

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : महोदय इस विषय पर मैं प्रारंभ से ही अपना हाथ उठा रहा हूं।

[हिन्दी]

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण-मध्य) : उपाध्यक्ष महोदय, हमारी पार्टी की तरफ से भी कोइ भी नहीं बोला।

उपाध्यक्ष महोदय : मैं मानता हूं कि आपकी पार्टी की तरफ से भी नहीं बोला।

श्री मंगत राम शर्मा (जम्मू) : जनाब, सबसे पहले कांग्रेस सरकार के प्रधान मंत्री ने और उसके बाद जो दो सरकारें हमारी सपोर्ट से आई, उन्होंने जम्मू-कश्मीर में इनीशियेटिव लिया। उन्होंने वहां के लिए इकोनामिक पैकेज दिया। वहां हालात नॉर्मल करने के लिए जो दिलचस्पी ली जा रही है, उसकी मैं सराहना करता हूं। इन्होंने बहुत अच्छा काम किया। इसकी सराहना होनी चाहिए।

मेरा दूसरा प्वाइंट यह है कि प्रधान मंत्री जी ने लास्ट में जो बयान दिया, उसे वह क्लेरिफाई करें। उन्होंने कहा कि जो लोकल मिलिटेंट्स हथियार छोड़कर बातचीत के लिए आगे बढ़ते हैं और मेनस्ट्रीम में आते हैं तो गवर्नमेंट ऑफ इंडिया और स्टेट गवर्नमेंट उनसे बातचीत के लिए तैयार है। मैं ऐसा समझता हूं कि यह बात सराहना के काबिल है। जो अपनी स्टेट के लोग हैं, उनसे जरूर बातचीत होनी चाहिए और हालात को नॉर्मल करना चाहिए।

मैं दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि इस बात को मानना पड़ेगा कि मिलिटैंसी जो तीन जिले हैं...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : आप उस बात को छोड़ दीजिए। प्रधान मंत्री खुद क्लैरिफाई करेंगे।

श्री मंगत राम शर्मा : मैं प्वाइंट रखूंगा तो वह क्लैरिफाई करेंगे। अगर मैं प्वाइंट्स ही नहीं रखूंगा तो वह उनको कैसे क्लैरिफाई करेंगे? मुझे दो बातें कहने दीजिए।

उपाध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री की स्टेटमैंट पर चर्चा हो रही है।

श्री मंगत राम शर्मा : मुझे पहले अपनी बात कहने दीजिए। इससे मेरी बात का जवाब आ जाएगा। तीन जिले, पूंछ, राजौरी और कारगिल से मिलिटैंसी ज्यादा बढ़ी है। देवेगौड़ा जी ने पैकेज प्रोग्राम की जो घोषणा की थी, उनमें से जम्मू की आईटम्स पर अमल नहीं हो रहा।

उपाध्यक्ष महोदय : ठीक है, बात हो गई है।

श्री मंगत राम शर्मा : जम्मू में पैकेज प्रोग्राम की आईटम्स पर क्या अमल हो रहा है?

उपाध्यक्ष महोदय : ठीक है। बात हो गई है। अब आप बैठ जाइये।

[अनुवाद]

श्री मधुकर सरपोतदार : महोदय, श्री जसवंत सिंह ने इस सभा में जो वक्तव्य दिया है, मैं उसका पूर्ण रूप से समर्थन करता हूं। दूसरे, पिछले $1^1/_2$ वर्ष से हमारा यह अनुभव रहा है कि हम बहुधा जम्मू और कश्मीर के मुद्दे पर चर्चा करते आएं हैं। यह अच्छा संकेत हैं कि हम बातचीत करने का प्रयास कर रहे हैं। और देश के इस भाग में अर्थात् जम्मू और कश्मीर में शांति स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। इसके साथ ही जब हम कुछ शर्तें रखें और इन्हीं शर्तों के अंतर्गत हम वहां के लोगों के साथ बातचीत करें, तो मैं उसे समझ सकता हूं।

परन्तु वे लोग हमारी भूमि और सम्पत्ति का अतिक्रमण कर रहे हैं और गोली-बारी करके लोगों को मार रहे हैं। भारत सरकार को अपनी नीति स्पष्ट करनी चाहिए कि वह किसके साथ वार्ता करने जा रही है और अंततोगत्वा भारत सरकार क्या कार्यवाही करने जा रही है। इतना ही नहीं, इस नीति में इन सभी अपराधियों, उग्रवादियों और जम्मू कश्मीर में अनावश्यक रूप से कठिनाइयों का सामना करने वाले लोगों को भारत सरकार का संदेश भी स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है और यह संदेश स्पष्ट होना चाहिए। इस मामले में मेरा माननीय प्रधान मंत्री जी से विनम्र निवेदन है कि वे अपनी नीति स्पष्ट करें।

[हिन्दी]

श्री इलियास आजमी (शाहबाद) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं जसवंत सिंह जी, श्री सोमनाथ चटर्जी, श्री चन्द्रशेखर और शरद पवार जी की बातों पर सहमति प्रकट करते हुए यह कहना चाहता हूं कि मुझे खुद इस बात का अफसोस है कि खास तौर से माननीय प्रधान मंत्री जी सिर्फ इस मामले में नहीं, दूसरे मामलों में भी सुबह एक बयान देते हैं और शाम को दूसरा बयान देते हैं। इससे भ्रम की स्थिति पैदा होती है।

प्रधान मंत्री (श्री इन्द्र कुमार गुजराल) : आप क्या बात कर रहे हैं? मैंने ऐसा कौन से कार्य में किया है?

श्री इलियास आजमी : मैं उनसे जानना चाहूंगा कि जब कश्मीर में उन्होंने बयान दिया कि हम बिना शर्त उग्रवादियों से बातचीत के

लिए तैयार हैं तो क्या किसी उग्रवादी संगठन ने उनसे बिना शर्त बातचीत करने की पेशकश की थी? उन्होंने अपनी तरफ से एक बात कही लेकिन दिल्ली में आकर उलट गए। वह इसको भी क्लैरिफाई करें।

[अनुवाद]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : महोदय, इस मुद्दे पर बोलने से पहले मैं अपने मित्र द्वारा की गई इस टिप्पणी का प्रबल विरोध करता हूं कि मैंने सुबह कुछ बयान दिया और शाम को कुछ और बयान दिया। मैं प्रत्येक मुद्दे के संबंध में दिए गए अपने वक्तव्य पर हमेशा दृढ़ रहा हूं और सदैव ही दृढ़ रहूंगा। और अब हम इस मुद्दे पर आते हैं।

मैं दो दिन के लिए कश्मीर गया था। इस दौरे के दौरान मुझे न केवल उस नयी रेल लाइन की आधारशिला रखने का अवसर प्राप्त हुआ था जिसे हम स्वयं ही घाटी में काजीकुंड से बारामूला तक रेल लाइन बिछाने जा रहे हैं। हमारा विचार यह था कि एक दिशा में ऊधमपुर से होकर जाने वाली रेल लाइन स्वाभाविक रूप से दूसरे क्षेत्र से निकलेगी और इसमें अधिक समय लग रहा है। इसी बीच हमने महसूस किया कि यदि हम साथ ही साथ घाटी में भी रेल लाइन बिछाएं तो रेल लाइन बिछाने के कार्य में और तेजी आएगी और यह उपयोगी रहेगा। बाद में इसे सुरंग के माध्यम से जोड़ा जा सकेगा।

रेल लाइन बिछाकर वहां अधिक रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास भी किया जाएगा। अतः इस वर्ष हमने घाटी में निर्माण कार्य हेतु लगभग 75 करोड़ रुपये की राशि निर्धारित की है।

इन दो कार्यों के अतिरिक्त, मुझे सेना के जवानों, उनके लीडरों, सीमा सुरक्षा बल के जवानों और उनके लीडरों को सम्बोधित करने का अवसर भी प्राप्त हुआ था। मैंने ये चार कार्य किए थे। कश्मीर में क्या स्थिति है? आज कश्मीर में जो स्थिति हैं हमने उसमें सुधार ला दिया है। ऐसा नहीं है कि विद्रोह समाप्त हो गया है परन्तु कुल मिलाकर मैं समझता हूं कि जम्मू-कश्मीर सरकार और केन्द्रीय सरकार दोनों ही सरकारें इस विद्रोह पर काबू पाने में सफल हो सकी है। इसी तरह सीमा पार से विद्रोह जारी है और भारी संख्या में हथियार पकड़े गए हैं। मैंने उन हथियारों के दो संग्रह देखे हैं जो बहुत ही बड़े और अत्याधुनिक हैं। मैंने समय-समय पर हुई अनेक झड़पों के आंकड़े भी देखें हैं। मैं इसका श्रेय अपने सशस्त्र बलों और साथ ही सीमा सुरक्षा बल और अन्य अर्द्धसैनिक बलों को देता हूं जो बहुत ही दृढ़ता और दक्षता के साथ हमारी सुरक्षा कर सके हैं। इसके साथ हमने पिछले तीन-चार महीनों में देखा है कि सीमा-पार से लगातार गोलीबारी हो रही है और मेरे मित्र रक्षा मंत्री जी, हमें इस बारे में और अधिक जानकारी देंगे। इस गोलीबारी का दृढ़तापूर्वक विरोध किया जा रहा है।

हमारी नीति का दूसरा आयाम भी है। न केवल यह सरकार बल्कि पूर्व सरकार भी मार्ग से विचलित हुए युवकों को सही मार्ग पर लाने का प्रयास करती रही है। मेरा विश्वास है कि ये युवक भारत के विरुद्ध झूठा प्रचार होने से पथभ्रष्ट हो गए हैं। उनमें से कुछ वापस आ गए हैं और उनमें से कुछ को विभिन्न सेवाओं में भी खपा लिया गया है। जो बात मैं कह रहा था उसे वस्तुतः स्पष्ट कर दिया गया है और विमान में साक्षात्कार के दौरान जो स्पष्टीकरण मांगा गया था, वह मैंने हिन्दुस्तान टाइम्स को भेज दिया है। मुख्य बात यह है कि हम सदैव उन युवकों से बात करने के इच्छुक रहे हैं जो हमारे अपने बच्चे है और हमारे अपने लड़के हैं और जो पथभ्रष्ट हो गए हैं। निःसंदेह इसका यह अर्थ है कि उन्हें हथियारों का त्याग करके वापस अपने घर की ओर आना चाहिए। मैं सही शब्द का प्रयोग करूंगा। जब मैं युवा बच्चों से पिता की तरह बात कर रहा था तो मेरे मित्र उस समय वहां उपस्थित थे, यदि किसी परिवार में लड़के पथभ्रष्ट हो जाते हैं अथवा मार्ग से विचलित हो जाते हैं तो परिवार का मुखिया होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि मैं उन्हें वापस बुला लूं, उनकी शंकाओं को दूर करने का प्रयास करूं। मैं उस पर कायम हूं। मैंने अपने दोनों भाषणों में यही कहा है इसे सौभाग्य कहा जाए अथवा दुर्भाग्य मैं विशेष रूप से काजीकुंड में उर्दू में बोल रहा था। मुझे उर्दू की अच्छी जानकारी है। अतः मै शुद्ध उर्दू में बोल रहा था। संभवतः मेरे बहुत से मित्र उर्दू नहीं जानते हैं। अतः जब मैं उन लड़कों के बारे में बात कर रहा था तो उन्होंने सोचा कि मैं सीमा-पार के आतंकवादियों के बारे में बात कर रहा था अथवा उन लोगों के बारे में बात कर रहा था जिन्हें पाकिस्तान का समर्थन प्राप्त है। नहीं, बिल्कुल नहीं।

मेरे दिमाग में दो बातें पूर्णतया स्पष्ट हैं। पहले दिन और जब कभी भी मैंने सदन में भाषण दिया तो मैंने एक बात स्पष्ट कर दी थी। भारत का सर्वधर्म सम्भाव और साथ ही भारत की अखंडता के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा। जम्मू और कश्मीर भारत का अंग है। सम्पूर्ण जम्मू और कश्मीर राज्य भारत का अंग है और सदैव ही भारत का अंग बना रहेगा। इस मामले में कोई समझौता नहीं किया जाएगा। इसलिए इसका कोई कारण नहीं है कि मैं उसके बारे में कहूं और मुझे आश्चर्य हुआ था कि मेरे मित्र श्री अटल बिहारी वाजपेयी जो इतने सुलझे हुए राजनयिक हैं उन्हें तथ्यों की पुष्टि किए बिना ही जल्दबाजी में मेरी आलोचना नहीं करनी चाहिए थी जिसका मुझे बहुत ही खेद है क्योंकि मैं उनकी वरिष्ठता का बहुत ही सम्मान करता हूं। परन्तु मैं केवल यही कहूंगा और सभा को पुनः आश्वस्त करता हूं कि कोई भी नीति संबंधी वक्तव्य नहीं दिया गया है। यह भारत सरकार की नीति रही हैं सिर्फ मेरी सरकार की नहीं, बल्कि इससे पहले की सरकारों की भी यही नीति रही है। यहां तक कि जब श्री अटल बिहारी वाजपेयी 13 दिन के लिए सत्ता में आए थे तो उसी नीति का अनुसरण किया गया था। अतः मैं इसी बात को दोहराऊंगा कि भारत ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : उनकी कोई नीति नहीं थी।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मैं इस पर अपनी राय नहीं दूंगा। परन्तु मैं केवल यह बात कहूंगा। इस सभा में मुझे यह कहने दिया जाए कि जब मैं यह कहता हूं कि भारत में सरकार है, जम्मू और कश्मीर में सरकार है, तो मैं महसूस करता हूं कि मैं इस सदन का प्रतिनिधित्व करता हूं। दोनों की सरकारें यह चाहती हैं कि मार्ग से विचलित युवक वापस आएं। हम चाहते हैं कि हमारे समाज में वे अपना स्थान तलाश

[श्री इन्द्र कुमार गुजराल]

करें। हमारी प्रबल अभिलाषा है कि उनके राज्य में शताब्दियों से चले आ रहे अंतर-साम्प्रदायिक संबंध उसी रूप में कायम रहें। हम चाहते हैं कि कश्मीर का जीवन जिस पर वह गर्व किया करता था, उसी रूप में वापस आए। हम यही कहने का प्रयास कर रहे हैं। जहां तक इन युवकों की चर्चा का संबंध है, उनके बारे में हर समय चर्चा की जा रही है, और यही कारण है कि इनमें से कुछ युवक वापस आ गए हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप साधारण उर्दू में बोलें। यदि आप ठेठ उर्दू में बोलेंगे तो वे आपकी बात नहीं समझेंगे।...*(व्यवधान)*

श्री सत्य पाल जैन (चण्डीगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने जो बात कही है और आपका जो टेलीविजन पर स्टेटमेंट आया है और जो बात आपने हाउस में कहीं, दोनों कंट्राडिक्ट्री हैं। टेलीविजन पर साढ़े आठ के बुलेटिन में था कि प्रधान मंत्री जी ने यह कहा है कि उग्रवादियों के साथ बिना शर्त बात करने को तैयार हैं और उसी बुलेटिन में बाद में जो न्यूज पढ़ रहा था, उसने कहा कि अभी-अभी प्राप्त समाचार के अनुसार प्रधान मंत्री ने बाद में यह बात कही है कि जब तक वे हथियार नहीं डालेंगे, तब तक हम बात नहीं करेंगे। दोनों से कौन सी बात सही है?

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : देखिये, आप एक मिनट मेरी बात सुन लीजिए। अगर आप बहस के लिए बहस करना चाहते हैं, तो मैं भी कर सकता हूं। लेकिन एक बात का ध्यान रखिये कि हिंदुस्तान की सिक्युरिटी, हिंदुस्तान का डिफेंस किसी भी सरकार की सबसे पहली जिम्मेदारी है और मैं उसके ऊपर कंसीड भी नहीं कर सकता और न कोई कंप्रोमाइज कर सकता हूं न ही कोई सरकार कर सकती है। अगर कोई अखबार वाला या अखबार पढ़ने वाला...*(व्यवधान)*

श्री सत्य पाल जैन : टी-वी- में ऐसा ही था।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : टी-वी- पर मेरी मोनोपोली नहीं है। मैं खबरें खुद नहीं पढ़ता।...*(व्यवधान)* यह कोई बात है करने की?

श्री सत्य पाल जैन : आप उसकी जांच करा लीजिए। ...*(व्यवधान)* सारा हिंदुस्तान सुनता है, आप उस दिन के बुलेटिन को निकालकर देखिये।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मैं बिल्कुल यह कह रहा हूं और पूरी शक्ति से कह रहा हूं कि हिंदुस्तान में एकता रहेगी। कोई धर्म के नाम पर इसको तोड़ने की कोशिश करे तो भी तोड़ने नहीं देंगे।

श्री प्रमोद महाजन (मुम्बई - उत्तर पूर्व) : देखिये आपके लोग पढ़ते हैं, उसका क्या अर्थ है, मुझे समझ में नहीं आता। आजकल दूरदर्शन पर प्रधान मंत्री इतनी बार आते हैं कि वह खुद न्यूज रीडर लगने लगे हैं।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : मैं इनसे यह कहने लगा हूं कि ये जो लोग धर्म के नाम पर देश को तोड़ना चाहते हैं...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री अकारण, अनावश्यक उत्तेजित हो रहे हैं। उनके बयान जिस तरह से छपे और जिस तरह से टेलीविजन में रिपोर्ट हुए, आखिर आपके बारे में जो बयान आते हैं तो हम यह मानकर चलते हैं कि बयान ठीक होंगे।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : आपको आखिरी बयान भी पढ़ना चाहिए जो ऑन रिकार्ड है, अगर पढ़ लेते तो आप उसे समझ भी लेते ...*(व्यवधान)*

श्री सत्य पाल जैन : दूरदर्शन में आपका कभी कुछ बयान आता है और कभी कुछ आता है, यही हमारा आरोप है।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर पहले बयान में और आखिरी बयान में अंतर है तो लोगों के मन में भ्रम पैदा होना स्वाभाविक है।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : लोगों के मन में होने दो लेकिन आप जैसे लोगों के मन में नहीं होना चाहिए, आप समझदार आदमी है। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रधान मंत्री का आभारी हूं, वह कह रहे हैं कि मेरे मन में भ्रम नहीं होना चाहिए। लेकिन ऐसी बात होनी ही नहीं चाहिए जो किसी के मन में भ्रम पैदा करे।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : इसीलिए आपको बयान देते वक्त इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब अगर सारा ध्यान हमको ही रखना है तो फिर प्रधान मंत्री क्या करेंगे

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : अब, मेरा सुझाव है कि इस मामले को समाप्त समझा जाए।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : जनाब, आप यह देशभक्ति मुझे मत सिखाइये, मुझे देशभक्ति का पूरा ज्ञान है।...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर : उपाध्यक्ष जी, मैं प्रधान मंत्री जी से बहुत विनम्र निवेदन करूंगा कि जरा गुस्सा कम करें। क्योंकि यह उनके लिए शोभा नहीं देता। पहली बात मैं कहूं, मैं इस बात में पड़ना नहीं चाहता था। बड़ा गुस्सा आता है, यह धर्म के नाम पर तोड़ना चाहते हैं, उसमें हम भी उनके कम विरोधी नहीं हैं। लेकिन धर्म के नाम पर यह देश नहीं टूटेगा। लेकिन देश को तोड़ने के लिए बाहर से जो बयान आते हैं, उस पर प्रधान मंत्री जी आपका एक दिन भी गुस्सा मैंने नहीं देखा। पिछले दो महीनों में कितने बयान आये हैं। क्या भारत सरकार की यह जिम्मेदारी नहीं थी कि उन बयानों का खंडन करें। गुस्सा यहां अटल बिहारी जी पर करने के पहले श्रीमान प्रधान मंत्री जी थोड़ा अपने पर गुस्सा करना सीखिये कि बाहर की ताकतें भारत के बारे में अनाप-शनाप बयान देती हैं और आपकी सरकार मौन रह जाती हैं,

तो देश में ही नहीं दुनिया में आपके बारे में भ्रम पैदा होता है। इस गुस्से से भ्रम नहीं मिटने वाला है।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : उपाध्यक्ष महोदय, मैं चन्द्र शेखर जी का बहुत आदर करता हूं। वे मेरे पुराने मित्र भी है। बाहर से ऐसे कौन से बयान आए हैं जिनका जवाब नहीं दिया गया है। कोई भी एक बयान बताइए, जिसका जवाब नहीं दिया गया हो।...*(व्यवधान)*

उपाध्यक्ष महोदय : रूडी जी आप बैठिए।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : चाहे कोई भी हो, जो देश को तोड़ने की बात करेगा, वह चाहे देश के अंदर से हो चाहे बाहर से हो, उसका पूरे जोर से जवाब देंगे।...*(व्यवधान)*

प्रो॰ रासा सिंह रावत (अजमेर) : कोई भी हो, लेकिन बी॰जे॰पी॰ तोड़ने वाली नहीं होगी।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री को यह स्वीकार करना चाहिए कि जम्मू कश्मीर में उनके अलग-अलग तरह के बयानों से भ्रम पैदा हुआ है और अगर यह मामला सदन में उठाया जा रहा है, तो यह उन्हें अवसर देता है कि वे स्थिति का स्पष्टीकरण करें। आप,स्पष्टीकरण देने के बजाय, हम पर आरोप लगा रहे हैं। हम पर आप धर्म के नाम पर देश को तोड़ने का आरोप लगा रहे हैं। वह आरोप निराधार है, शरारतपूर्ण है।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : क्या बाबरी मस्जिद ऐसे ही टूट गई? ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, अभी प्रधान मंत्री देश को तोड़ने की बात कर रहे थे।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : बाबरी मस्जिद को तोड़ने की बात कह रहा था।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, अब प्रधान मंत्री बाबरी मस्जिद को तोड़ने पर आ गए।...*(व्यवधान)*

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : बाबरी मस्जिद को तोड़ना इस बात का चिह्न था कि देश को तोड़ना चाहते हैं।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, अब यदि यह बहस और आगे चलेगी, तो मुझे लगता है कि प्रधान मंत्री सारा संयम छोड़कर ऐसी बातें कह देंगे जो उनके मुंह से शोभा नहीं देती हैं। अगर आपको बाबरी मस्जिद पर बहस करवानी है, तो हम तैयार हैं।

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : हो जाए।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, आखिर जम्मू कश्मीर के बारे में इस सदन में एक प्रस्ताव पास किया गया और प्रधान मंत्रीजी ने भी माना कि वे उससे बंधे हुए हैं। हर सरकार उससे बंधी हुई है। उनका पहला, जैसा बयान आया, बिना शर्त बात को तैयार हैं, अब स्वाभाविक है,...*(व्यवधान)*

अब बैठे रहिए, ज्यादा टोकिए मत। क्योंकि अगर आप इस तरह से टोकेंगे, तो फिर हम भी टोकेंगे और इस तरह से सदन नहीं चलेगा। आपको सुनने का भी धैर्य होना चाहिए।...*(व्यवधान)*

रक्षा मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव) : आपको भी गुस्सा नहीं आना चाहिए।...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उपाध्यक्ष महोदय, अब अगर समाचार समितियां या टेलीविजन, प्रधान मंत्री के दो अलग-अलग बयानों को रिपोर्ट करते हैं, सारे देशवासी सुनते हैं, तो क्या मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक नहीं है कि आखिर प्रधान मंत्री ने क्या कहा है। आपका जो बाद का बयान आया, वह ठीक आया। लेकिन इससे बात साबित हो गई कि जो पहले का बयान था वह गलत था और आपका बाद का जो बयान आया वह ठीक था। आखिर बिना शर्त उन लोगों के साथ कैसे वार्ता हो सकती है जो हथियार के बल पर अपनी बात मनवाना चाहते हैं, जो कश्मीर को भारत से बाहर लाना चाहते हैं, जो विदेशों के साथ हाथ मिला रहे हैं, उनके साथ तो बिना शर्त बातचीत का प्रश्न ही पैदा नहीं होना चाहिए। अगर प्रधान मंत्री इतनी ही बात कहते और इधर उधर की गुफ्तगू न करते, तो इतनी गर्मी पैदा नहीं होती। अब देखते है कि आप कितने ठंडे हुए हैं। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उपाध्यक्ष महोदय : मैं सभा से अनुरोध करता हूं कि इस मामले को स्पष्ट कर दिया गया है और इसे समाप्त समझा जाए।

[हिन्दी]

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : लेकिन अब ठीक हो गया है।

[अनुवाद]

मैं अपनी बात संक्षेप में कहूंगा। मुझे प्रसन्नता हैं कि हम एक दूसरे से अच्छे माहौल में बात कर रहे हैं। मुख्य बात यह है कि मैं प्रसन्न हूं और विपक्ष के माननीय नेता के प्रति आभारी हूं जोकि एक अच्छे मित्र भी हैं और उन्होंने संसद के संकल्प की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया है। संसद का संकल्प हम सभी के लिए बाध्यकारी है और सदैव ही बाध्यकारी रहेगा क्योंकि हम सभी उसके प्रति प्रतिबद्ध है। यही बात मैंने प्रारम्भ में कही है और मैं पुनः उसे दोहराता हूं भारत के सर्वधर्म संभाव और साथ ही भारत की अखंडता के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा। जब मैं कहता हूं 'अखंडता', तो मैं उसमें 1947 से पूर्व के सम्पूर्ण जम्मू-कश्मीर राज्य को शामिल करता हूं। मैं यही बात स्पष्ट करना चाहता है।

जहां तक हमारी पथभ्रष्ट युवकों, हमारे अपने बच्चें का संबंध हैं यदि वे वापस आना चाहते हैं और बिना किसी पूर्व शर्त के बात करना चाहते हैं तो मैं उनसे बात करने के लिए तैयार हूं।

उपाध्यक्ष महोदय : श्री अनंत कुमार

...*(व्यवधान)*